Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.177, www.srjis.com Refereed &
Peer Reviewed, UGC Approved Sr. No.49366, MAR–APR, 2018, VOL- 5/44

समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित डॉ0 अम्बेडकर प्राथमिक पाठशाला विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन

विवेक नाथ त्रिपाठी [1] **, Ph.D.** & ***विनोद कुमार यादव*** [2]

[1]*सहायक आचार्य शिक्षा विभाग बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर केंद्रीय विश्विद्यालय लखनऊ उत्तर प्रदेश, भारत*

Email.viveknathtripathi@gmail.com

[2]शोध छात्र, ***शिक्षा विभाग बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर केंद्रीय विश्विद्यालय लखनऊ***

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। जिसमे शोध न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया एवं न्यादर्श के रूप में कुल 58 प्राथमिक विद्यालयों में से 25 प्राथमिक विद्यालयों को लिया गया है। प्रत्येक विद्यालय में से चार शिक्षकों को चुना गया है इस तरह से इन सभी विद्यालयों से 100 शिक्षकों को लिया गया है। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करके गया आंकडों के एकत्रिकण के लिए शोध कर्ता द्वारा प्रश्नवाली प्रयोग किया गया तथा विश्लेषण के लिए प्रतिशत, का प्रयोग किया गया है। शोध परिणाम यह बताते है ,कि समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को समय से वेतन न मिलना, मूलभूत आवश्यकताओं का पूर्ण न होना, शिक्षकों हेतु शिक्षण सहायक सामग्री का उपलब्ध न होना, शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य के अलावा अन्य कार्य करवाना, विद्यालय हेतु आपातकालीन वित की व्यवस्था न होना, विद्यालय में पुस्तकालय की व्यवस्था न होना, विद्यालय में महिला व पुरूष हेतु अलग–अलग प्रसाधन की व्यवस्था का न होना इत्यादि समस्यायें परिलक्षित होती है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

जनतंत्रीय शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक को महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षा ही व्यक्तियों को उनके कर्तव्य और जिम्मेदारियों को समझने के योग्य बना सकती है शैक्षिणक आदर्श स्थापित करने का कार्य अध्यापक का होता है। जिससे व्यक्ति अपने तथा अपनी पीढ़ी के प्रति कल्याण की भावना से कार्य करे शिक्षा को अत्यन्त व्यापक दृष्किोण से देखना होगा शिक्षक को समाज के विकास लिए शारीरिक, बौद्धिक, और नैतिक क्षमताओं का उपयोग करना चाहिए शिक्षक की गुणवत्ता से देश एवं समाज की प्रगति का सीधा संबध है और इसलिए कोठारी आयोग ने कहा है कि राष्ट्र के किसी व्यक्ति का स्तर उस राष्ट्र के शिक्षक के स्तर से ऊंचा नही उठ सकता समाज में शिक्षकों का सम्मान था, समाज को शिक्षक का संरक्षक माना जाता था शिक्षा व्यक्ति के विचार एवं व्यवहार में समाजोपयोगी परिवर्तन करती है। शिक्षा मनुष्य जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रक्रिया है। व्यक्तित्व के सन्तुलित एवं सम्पूर्ण विकास को शिक्षा का लक्ष्य माना गया है। शिक्षा के फलस्वरूप ही मनुष्य ने एक सांस्कृतिक एवं समाजिक वातावरण का सृजन किया है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य अपनी पाशविक शक्ति का दमन करके उन्हें कल्याणकारी मार्ग की ओर ले

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जाता है और अपने जीवन में ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'' की स्थापना करता है। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा देना समस्त कार्यो में सबसे पवित्रतम् और परमावश्यक माना जाता है। शिक्षा का कार्य शिक्षण द्वारा किया जाता है, शिक्षण की प्रक्रिया निश्चित रूप से अध्यापक शिक्षा पर निर्भर है, शिक्षा का केन्द्र अध्यापक होते है और अध्यापकों की गुणवत्ता प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिबिबिंत होती हैं। क्योकि शिक्षक ही वह माध्यम है जिसके द्वारा भावी शिक्षक गण निहित कौशल तथा तकनीकों से परिचित हो सकते है और उनमें दक्षतार्जन करते हुए अपेक्षित शिक्षण व्यवहारों की आत्मसात करने में सक्षम हो पाते है। शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न औपचारिक एवं अनौपचारिक साधन है। औपचारिक साधनों में सबसे पहले प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराने वालों में मुख्यतः प्राथमिक विद्यालयों का नाम विशेष रूप से आता है। इस औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के पृथक स्तर को प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है ये प्राथमिक शिक्षा एक वर्ष से छः वर्ष की उम्र से शुरू होकर 14 वर्ष की उम्र तक चलती है। कक्षा एक से आठ तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है। कोठारी कमीशन ने कक्षा एक से कक्षा पॉच तक की शिक्षा को निम्न प्राथमिक शिक्षा तथा कक्षा छः से आठ तक की शिक्षा को उच्च प्राथमिक शिक्षा कहा है। प्राथमिक शिक्षा को सफल बनाने के लिए सरकार द्वारा अनेक योजनाएं चलाई गई जैसे सर्व शिक्षा अभियान 2001 शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 माध्यमिक शिक्षा अभियान इसी क्रम में सबको शिक्षा उपलब्ध कराने एवं शिक्षा में सब का समावेशन हो इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए समाज के विभिन्न वर्ग जो शिक्षा से वंचित हो गए हैं उनको शिक्षा प्रदान करने की दिशा में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा समाज कल्याण विभाग के अंतर्गत निजी प्रबंध तंत्र के माध्यम से कुछ प्राथमिक विद्यालयों का संचालन जैसे हरिजन प्राथमिक विद्यालय डॉक्टर अंबेडकर प्राथमिक विद्यालय का संचालन कर समाज के वंचित वर्ग को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है ।प्राथमिक शिक्षा उच्च शिक्षा प्राप्त करने की दिशा में पहला कदम है डॉक्टर अंबेडकर प्राथमिक पाठशाला में कार्यरत शिक्षक उस सीढ़ी के प्रथम संरक्षक हैं जिनके ऊपर भविष्य की रूपरेखा करने का दायित्व दिया गया है और वही अगर विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करेंगे तो भविष्य के शिक्षा का प्रारूप क्या होगा

डॉ0 अम्बेडकर प्राथमिक पाठशाला : डॉक्टर अंबेडकर प्राथमिक पाठशाला उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित एक गैर अनुदानित विद्यालय जो समाज के वंचित वर्गों को मुक्त शिक्षा प्रदान कर रहा है जिस को संचालित करने हेतु उत्तर प्रदेश सरकार समय.समय पर अनुदान भी देती है कुछ प्राथमिक पाठशालाएँ समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित किये जाते है वर्ष 1948–49 में 'हरिजन सहायक विभाग' के रूप में इस विभाग की स्थापना हुई। सामाजिक क्षेत्र की योजनाओं के लिए 1955 में 'समाज कल्याण विभाग' की स्थापना हुई। वर्ष 1961 में हरिजन सहायक विभाग एवं समाज कल्याण विभाग को मिलाकर हरिजन एवं समाज कल्याण विभाग बनाया गया। वर्ष 1991–92 में विभाग का नाम समाज कल्याण विभाग कर

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दिया गया। समाज के कमजोर वर्गों का शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक उत्थान कर उन्हें समाज की मुख्य धारा मे लाना ही समाज कल्याण का मुख्य उद्देश्य है।

डॉ0 अम्बेडकर प्राथमिक पाठशाला में जाकर शिक्षकों से बात–चीत करने पर इस बात की जानकारी प्राप्त हुई की इस विद्यालय के शिक्षकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिससे शिक्षण प्रक्रिया पूरी तरह प्रभावित होती है। इस विद्यालय में परिषदीय प्राथमिक विद्यालय की तरह स्थानान्तरण की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं है जिसके कारण शिक्षिकाओं को अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन से सम्बन्धित शोध कार्य– : स्याल सावित्री 1955, ने बीकानेर शहर में प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापिकाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया तथा उन्होंने पाया कि अध्यापिकाओं को घर से दूर नियुक्ति हो जाने पर आने जाने में काफी समय व धन का व्यय होता है। जे0पी0 नायक 1961, ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की स्थानान्तरण की समस्याओं का वर्णन किया और सुझाव दिया कि स्थानान्तरण में प्रशासन और जनता का बराबर सहयोग देना चाहिए। मेहता पारसमल 1962, ने ग्रामीण स्तरीय अध्यापकों की रचनात्मक एवं सेवा सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षकों की स्थानीय समस्या नेताओं द्वारा परेशान कर उसके साथ व्यवहार किया जाता है। शर्मा भवरलाल 1966 ,ने पंचायत समिति, धारोल बासवाड़ा के एक प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि अध्यापक को आवास एवं पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है। अध्यापक अपने बच्चों की शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं कर पाते है। गांव में आवश्यक सामान उपलब्ध नहीं होता है। अग्रवाल 1969 ,ने महाराष्ट्र के 275 ग्रामो के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले शिक्षकों के आवागमन व आवास की कठिनाईयों पर 5300 अध्यापकों पर प्रश्नावली द्वारा अध्ययन किया तथा उन्होंने पाया कि इनमें से 43 प्रतिशत अध्यापक रोज 8 से लेकर 10 कि0मी0 तक पैदल चलकर, 23 प्रतिशत साईकिल द्वारा, 8 से 20 कि0मी0 तक व 10 प्रतिशत द्वारा 5 प्रतिशत रिक्शा से आये। 12 प्रतिशत अध्यापक अपने वाहन से 7 प्रतिशत अध्यापक ट्रेन द्वारा प्रतिदिन 20–30 कि0मी0 दूरी से आते है आवास की असुविधा 73 प्रतिशत अध्यापकों को है केवल 2 प्रतिशत अध्यापकों के आवास अपने ही प्राथमिक विद्यालय के पास है। व्यास अमरचन्द्र 1971, 75 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि अतिरिक्त अन्य कार्यों में नियोजित करना उपयुक्त योग्यता प्राप्ति पर पदोन्नति न देना, पुस्तकालयों में समय पर पुस्तकें न मिलना और उच्च अधिकारियों से अपेक्षित व्यवहार सहन करना बताया। 60 प्रतिशत अभिभावकों ने रूचिकर विषय अध्यापन हेतु न मिलना व शिक्षण कालांश में अन्य कार्य करना बताया। |मैक्डेमिअल लिन्डेवकी 1981,ने ''प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों की सामाजिक व आर्थिक कठिनाइयों का अध्ययन'' किया तथा उन्होंने पाया कि 83 प्रतिशत अध्यापकों को सम्मान व सुरक्षा प्राप्त नहीं है व 93 प्रतिशत अध्यापकों को कम वेतन, आवास की असुविधा, परिवार के पालन पोषण में समस्या, इत्यादि समस्याओं से पीड़ित हैं। एस0डी0

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गाडमिल 1981, ने अपने अध्ययन में पाया कि अध्यापकों को विद्यालय जाने में अधिक समय लगता है और अधिकांश बस, साइकिल एवं आटो रिक्शा के द्वारा विद्यालय जाते है। 14.36 प्रतिशत अध्यापक ऐसी स्थिति में थे कि वह विद्यालय आने–जोन के लिये पैसे खर्च नहीं कर सकते। 65.93 प्रतिशत अध्यापक पसन्द करते थे कि वह एक ही स्कूल में पढ़ायें। 12.25 प्रतिशत अध्यापक दूसरे स्कूल में जाना पसन्द करते है। 16.19 प्रतिशत अध्यापक ग्रामीण स्थानों के समीप विद्यालय में जाना पसन्द करते थे। 1.12 प्रतिशत सुबह एवं 1.49 प्रतिशत अध्यापक रात्रि के समय पढ़ाना चाहते थे। इस शोध कार्य के प्रारंभिक अवधि में अध्ययन हेतु एक प्रारंभिक सर्वेक्षण किया गया जिसमें डॉक्टर अंबेडकर प्राथमिक विद्यालय के कुछ विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया और कुछ बिंदुओं को लेकर शिक्षकों से चर्चा की गई जिसमें या पाया गया कि शिक्षकों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है इस शोध कार्य को आगे बढ़ाने हेतु पूर्व में जो अध्ययन किए गए उनका भी अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि शिक्षकों की समस्याओं से संबंधित अध्ययन तो हुए हैं परंतु अंबेडकर प्राथमिक विद्यालय समाज कल्याण के अंतर्गत संचालित शिक्षकों की समस्याएं का अध्ययन नहीं किया गया है पुर में जो अध्ययन हुए भी हैं अध्यापकों से शिक्षकों की समस्याओं के विभिन्न पक्षों का पता लगाया गया जिसमें से कुछ पक्ष इस प्रकार से निकल कर आए शिक्षकों के शिक्षण कार्य से संबंधित समस्याएं आर्थिक समस्याएं व्यक्तिगत समस्याएं जो शिक्षण कार्य में बाधा पहुंच आती है प्रशासनिक समस्याएं इत्यादि उक्त पक्षों के निर्धारण के बाद शोधकर्ता के मन में यह विचार आया कि इन पक्षों पर समाज कल्याण द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय में कार्य शिक्षकों की समस्याओं की स्थिति को जाना जाए वह किस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं उनके समस्याओं की प्रकृति क्या है और अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर सरकार को सुझाव दिया जाए इसी क्रम में कुछ प्रश्नों के उत्तर ढूंढने का प्रयास शोध के माध्यम से किया गया है।

समस्या कथन– " समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित डॉ0 अम्बेडकर प्राथमिक पाठशाला विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन करना"

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य– मऊ जिले के समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन करना है।अध्ययन को विस्तृत करते हुए एवं समस्याओं के क्षेत्र को देखते हुए अध्ययन हेतु उद्देश्यों को निर्मित किया गया

1. समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित डॉ0 अम्बेडकर प्राथमिक पाठशाला विद्यालयों में कार्यरत शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन।
2. समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित डॉ0 अम्बेडकर प्राथमिक पाठशाला विद्यालयों में कार्यरत आर्थिक समस्याओं का अध्ययन।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित डॉ0 अम्बेडकर प्राथमिक पाठशाला विद्यालयों में कार्यरत व्यक्तिगत समस्याओं का अध्ययन।
4. समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित डॉ0 अम्बेडकर प्राथमिक पाठशाला विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के संस्थागत समस्याओं का अध्ययन।

प्रतिदर्श एवं अनुसंधान विधियॉः– उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में कुल 58 प्राथमिक विद्यालयों में से 25 प्राथमिक विद्यालयों को लिया गया है। प्रत्येक विद्यालय में से चार शिक्षकों को चुना गया है इस तरह से इन सभी विद्यालयों से 100 शिक्षकों को लिया गया है। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करके गया आंकडों के एकत्रिकण के लिए शोध कर्ता द्वारा प्रश्नवाली प्रयोग किया गया तथा विश्लेषण के लिए प्रतिशत, का प्रयोग किया गया है।

परिसीमन– प्रस्तुत शोध में मऊ जनपद के समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

ऑकड़ों का विश्लेषण, व्याख्या ऑकड़े एकत्र करने के लिए स्वनिर्मित मत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इनके उत्तरों का विश्लेषण करके प्राप्तियॉ निकाली गयी है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में प्राप्त विभिन्न विकल्पों के प्रतिशत के आधार पर ऑकड़ों का विवेचन किया गया है।

सारिणी संख्या .1

शैक्षिक समस्या से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तरों का प्रतिशत विश्लेषणः–

प्रश्न कथन	हमेशा	सामान्य	कभी–कभी	कभी नहीं
अभिभावकों का सहयोग	10	00	80	10
विद्यार्थियों का अधिगम स्तर	80	00	80	10
संसाधनों का अभाव	75	10	15	00
पाठ्यक्रम का वर्तमान आवश्यकता के अनुसार ना होना	00	18	82	00
अन्य कार्यों में सहयोग लेना	100	00	00	00
अभिप्रेरणा एवं सहयोग अभाव	73	27	00	00
बच्चों का व्यवहार एवं उपस्थित	19	60	21	00
छात्र/छात्राएँ बीच में ही शिक्षा छोड़ देती है	00	00	00	100
शिक्षण की प्रशंसा की जाती है	13	53	34	00
समय में परिवर्तन होता है	100	00	00	00
अभिभावकों की मीटिंग होती है।	60	40	00	00
समस्या उत्पन्न होने पर	73	21	06	00

अभिभावकों के सहयोग से संबंधित प्रश्न के प्रतिउत्तर में 100 में से 80 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा यह बताया गया कि कभी.कभी अभिभावकों का सहयोग मिलता है वहीं पर केवल 10 प्रतिशत शिक्षकों का कहना था कि अदाओं का हमेशा सहयोग मिलता है शिक्षकों का मानना था की आंखों का सकारात्मक सहयोग होना भी हमारे लिए एक शैक्षिक

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समस्या उत्पन्न करता है 75 प्रतिशत किया मानते हैं विद्यार्थी ग्रामीण परिदृश्य से आते हैं गरीब परिवारों के बच्चे होते हैं उनका प्रारंभिक अधिगम होना एक समस्या का रूप लेता है अंबेडकर प्राथमिक विद्यालय मैं हमेशा संसाधनों का अभाव रहता है संस्था संसाधनों के अभाव में शैक्षणिक क्रियाएं प्रभावित होती है 82 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है पाठ्यक्रम का आवश्यकतानुसार ना होना शिक्षण की दृष्टि से कभी भी समस्या उत्पन्न नहीं करता तो पीछे जो कारण है विद्यार्थियों ने शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव है शिक्षकों के अनुसार हमेशा अन्य कार्यों में लिप्त होना होने के कारण उन्हें संपादित करने में समस्या होती है जिसके कारण उन्हें अन्य प्रकार की समस्याओं का सामना करना 73 शिक्षक हमेशा प्रशासन के सहयोग एवं अभिप्रेना का अभाव शिक्षण प्रक्रिया में एक समस्या का कार्य बकर्ती है।कक्षा में प्रतिदिन उपस्थित रहते/रहती है। शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए है उनमें 60 प्रतिशत छात्र/छात्राएँ कक्षा में सामान्य रूप से उपस्थित रहती है तथा 21 प्रतिशत छात्र/छात्राएँ कक्षा में कभी–कभी उपस्थित रहती है। छात्र/छात्राओं के शिक्षा को बीच में छोड़ देने से है। 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया कि उनके विद्यालय में छात्र/छात्राएँ यदा–कदा ही शिक्षा बीच में छोड़कर चली जाती है। शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 13 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया कि प्रधानाध्यापकों द्वारा शिक्षण कार्य की प्रशंसा हमेशा की जाती है, 53 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया कि प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षण कार्य की प्रशंसा कभी–कभी की जाती है तथा 34 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया कि प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षण कार्य की प्रशंसा बहुत कम की जाती है। 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया कि विद्यालय के समय में परिवर्तन एवं गर्मियों में होता है। शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि प्राथमिक विद्यालय में उत्पन्न होने वाली शैक्षिक समस्याओं को हमेशा दूर किया जाता है। 11 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षण कार्य के समय शिक्षक द्वारा शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग आवश्यतानुसार किया जाता है, 23 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग हमेशा किया जाता है तथा 66 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षण सहायक सामग्री उपलब्ध नही हो पाती है। 60 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि छात्र/छात्राओं के शिक्षा से सम्बन्धित अभिभावकों की मीटिंग मासिक होती है तथा 40 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि छात्र/छात्राओं के शिक्षा से सम्बन्धित अभिभावकों की मीटिंग त्रैमासिक होती है। 73 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षा से सम्बन्धित कोई भी समस्या उत्पन्न होने पर छात्र/छात्राएँ हमेशा प्रश्न पूछने में रूचि लेती है। उपर्युक्त प्रश्न का सम्बन्ध शिक्षकों की नजर में राज्य सरकार द्वारा अन्य कार्य करवाने से शिक्षण कार्य प्रभावित होने से है। शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 21 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि राज्य सरकार द्वारा अन्य कार्य करवाने से हमेशा शिक्षण कार्य प्रभावित होता है, 29 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षण कार्य सामान्य रूप से तथा 50 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षण कार्य कभी–कभी प्रभावित होता है।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारिणी संख्या .2

आर्थिक समस्या से सम्बन्धित प्रश्नावली के प्रश्नों के उत्तरों का **प्रतिशत विश्लेषणः–**

प्रश्न कथन	हमेशा	सामान्य	कभी–कभी	कभी नहीं
आपकी नौकरी स्थायी है।	100			
आपकों हर माह वेतन सही समय पर मिलता है।	93	60	21	0
समान–कार्य के लिए वेतन विसंगतियॉ कार्य की हतोत्साहित करती है।	66	34	00	00
आय में वृद्धि के लिए प्रयोग में लाते है।	68	12	00	00
वेतन सम्बन्धी सुविधाएँ है।	89	11	00	00
शिक्षण के अतिरिक्त अन्य सेवाओं हेतु प्रयासरत है।	100	00	00	00
सरकार द्वारा दी रही वेतन ग्रेड पे से सन्तुष्ट है।	79	00	00	21
विद्यालय में रख–रखाव के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रदान की जा रही राशि है।	100	00	00	00
आपातकालीन वित की व्यवस्था की जाती है।	100	00	00	00

100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि उनकी नौकरी स्थायी है। 93 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षकों का वेतन हर माह सही समय पर कभी नहीं मिलता है। वेतन विसंगतियॉ कार्य को हतोत्साहित शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए है उनमें से 66 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि समान कार्य के लिए वेतन विसंगतियॉ हमेशा हतोत्साहित करती है तथा 34 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि समान कार्य के लिए वेतन विसंगतियॉ सामान्य रूप से हतोत्साहित करती है। शिक्षकों के आय में वृद्धि के लिए व्यवसाय प्रयोग में लाने से है। शिक्षकों द्वारा जा उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 68 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि अपनी आय में वृद्धि के लिए पारम्परिक व्यवसाय का प्रयोग करते है तथा 32 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि अपनी आय में वृद्धि के लिए कुछ नही करते है। 11 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि वेतन से सम्बन्धित सुविधाएँ पूर्ण है तथा 89 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि वेतन से सम्बन्धित सुविधाएँ सामान्य है। शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य में रहते हुए अन्य सेवाओं हेतु प्रयास से हैं। शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए है उनमें से 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षण के अतिरिक्त कोई प्रयास नहीं करते 79 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि राज्य सरकार द्वारा दी जा रही वेतन ग्रेड पे से सामान्य रूप से सन्तुष्ट है। 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में रख रखाव हेतु राज्य सरकार द्वारा कोई राशि नही दी जाती है। विद्यालय को दी जाने वाली विता व्यवस्था से है। शिक्षकों द्वारा जो उत्तर

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्राप्त हुए है उनमें से 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में आपातकालीन वित्त की व्यवस्था विद्यालय प्रबन्धक द्वारा की जाती है।

सारिणी संख्या 3

व्यक्तिगत समस्या से सम्बन्धित प्रश्नावली प्रश्नों के उत्तरों बारम्बारता व प्रतिशत

प्रश्न कथन	हमेशा	सामान्य	कभी–कभी	कभी नहीं
विद्यालय में शिक्षण कार्य करना पसंद है।	51	49	00	00
अतिरिक्त कार्य कौन–कौन से करने पड़ते है	100	00	00	00
प्रबन्धक का दृष्टिकोण है।	27	73	00	00
मूलभूत संसाधनों की व्यवस्था है।	53	00	47	00
सामाजिक कार्यों में सहभागिता रखते है।	00	42	00	00
आवश्यक कार्य हेतु छुट्टी मिल जाती है।	00	47	53	00
अनुचित दबाव डाला जाता है।	00		00	100
औचक निरीक्षण किया जाता है।	37	63	00	00

51 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि इस विद्यालय में शिक्षण कार्य करना बहुत अधिक पसन्द है तथा 49 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षण कार्य में रूचि होने के कारण शिक्षण कार्य पसन्द है। शिक्षकों के उपर विद्यालय द्वारा शिक्षणेत्तर कार्यभार दिये जाने से है। शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए है उनमें से 53 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय द्वारा शिक्षणेत्तर कार्यभार आवश्यकतानुसार दिया जाता है तथा 47 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय द्वारा शिक्षणेत्तर कार्यभार कभी–कभी दिया जाता है। शिक्षकों द्वारा अतिरिक्त कार्य करने से है। शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि उनको चुनाव में ड्यूटी लगती है, जनगणना कार्य करना पड़ता है तथा विद्यालय के कार्य से जिले पर भी जाना पड़ता है। 47 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में मूलभूत संसाधनों की व्यवस्था खराब है तथा 43 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में मूलभूत संसाधनों की व्यवस्था बहुत खराब है।

शिक्षकों के प्रति प्रबन्धक के दृष्टिकोण से है। शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 27 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि उनके प्रति प्रबन्धक ाक दृष्टिकोण बहुत अच्छा है, तथा 73 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि उनके प्रति प्रबन्धक का दृष्टिकोण अच्छा है।

28 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि सामाजिक कार्यों में सहभागिता बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते है, 14 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि सामाजिक कार्यों में हिस्सा सामान्य रूप से लेते है, 42 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि सामाजिक कार्यों में सहभागिता करने के लिए समय ही नही मिलता है तथा 16

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि सामाजिक कार्यों में कोई दिलचस्पी नहीं है। 53 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि आवश्यक कार्य हेतु छुट्टी के लिए सिफारिश करनी पड़ती है तथा 29 प्रतिशत उत्तरों मे कहा गया है कि आवश्यक कार्य हेतु छुट्टी समय पर नही मिलती है। 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि शिक्षण हेतु कभी–नही अनुचित दबाव बनाया जाता है। 47 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि उनके शिक्षण कार्यों की सराहना छात्र/छात्राओं द्वारा की जाती है, 43 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि उनके शिक्षण कार्यों की सराहना सहयोगी शिक्षकों द्वारा की जाती है, 7 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि उनके शिक्षण कार्यों की सराहना प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या द्वारा की जाती है तथा 3 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि उनके शिक्षण कार्यों की सराहना किसी के द्वारा भी नही की जाती है।
63 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि प्रशासनिक जिला स्तर द्वारा औचक निरीक्षण एक साल में एक बार होता है तथा 37 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि प्रशासनिक जिला स्तर द्वारा औचक निरीक्षण करने का कोई समय निर्धारित नही है।

सारिणी संख्या .4

संस्थागत समया से सम्बन्धित प्रश्नावली के प्रश्नों के उत्तरों बारम्बारता व प्रतिशत

प्रश्न कथन	हमेशा	सामान्य	कभी–कभी	कभी नहीं
अध्यापन कार्य हेतु पर्याप्त मात्रा में कक्ष संख्याओं की उपलब्धता है।	47	00	53	00
विद्यालय में भोजन की व्यवस्था	100			
अच्छे प्रसाधन की व्यवस्था रहती है।	77	77		
महिला व पुरूष हेतु अलग–अलग प्रसाधन की व्यवस्था है।	89	11	00	00
अच्छे पुस्तकालय की व्यवस्था है।	100	00	00	100
बैठने की उचित व्यवस्था हैं।	87	13	00	00
शिक्षकों हेतु बैठने की उचित व्यवस्था है।	94	00	06	00
पीने योग्य पानी की उचित व्यवस्था है।	43	43	14	00
अलग से कार्यालय की व्यवस्था है।	65	00	35	00
किताबों की मात्रा पर्याप्त संख्या में उपलब्ध रहती है।	92	08	00	00

विद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु पर्याप्त मात्रा में कक्ष संख्याओं की उपलब्धता । शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 47 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में कक्ष संख्याओं की उपलब्धता पर्याप्त संख्या में है तथा 53 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में कक्ष संख्याओं की उपलब्धता अपर्याप्त संख्या में है। विद्यालय में भोजन की व्यवस्था हेतु कमरे की व्यवस्था । शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया कि विद्यालय में भोजन की व्यवस्था हेतु कमरे की व्यवस्था है। विद्यालय में एक अच्छे प्रसाधन की व्यवस्था से हैं शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 23 प्रतिशत

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में अच्छे प्रसाधन की व्यवस्था है तथा 77 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में अच्छे प्रसाधन की व्यवस्था नही है। 89 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि महिला एवं पुरूष हेतु अलग–अलग प्रसाधन विद्यालय में अच्छे प्रसाधन की व्यवस्था नही है।

विद्यालय में पुस्तकालय की व्यवस्था । शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 100 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में पुस्तकालय की व्यवस्था नही है। विद्यालय में विद्यार्थियों हेतु बैठने की उचित व्यवस्था से हैं शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 13 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में विद्यार्थियों हेतु बैठने की उचित व्यवस्था है तथा 87 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में विद्यार्थियों हेतु बैठने की उचित व्यवस्था नही है।

शिक्षकों हेतु बैठने की उचित व्यवस्था से हैं शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 94 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में शिक्षकों हेतु बैठने की उचित व्यवस्था है तथा 6 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में शिक्षकों हेतु बैठने की उचित व्यवस्था नही है। पीने योग्य पानी की उचित व्यवस्था से हैं शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 57 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में पीने योग्य पानी की उचित व्यवस्था है तथा 43 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि विद्यालय में पीने योग्य पानी की उचित व्यवस्था नही है।` 65 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्य हेतु अलग से कार्यालय की व्यवस्था है तथा 35 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्य हेतु अलग से कार्यालय की व्यवस्था नही है। विद्यालय में किताबों की मात्रा पर्याप्त संख्या में उपलब्ध रहने से हैं शिक्षकों द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए उनमें से 92 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि किताबों की मात्रा पर्याप्त संख्या में उपलब्ध रहती है तथा 8 प्रतिशत उत्तरों में कहा गया है कि किताबों की मात्रा पर्याप्त संख्या में कभी–कभी उपलब्ध रहती

निष्कर्ष,

शैक्षिक समस्या से सम्बन्धित प्राप्तियॉः– अध्ययन द्वारा यह पाया गया है कि समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को समय से वेतन न मिलना, मूलभूत आवश्यकताओं का पूर्ण न होना, शिक्षकों हेतु शिक्षण सहायक सामग्री का उपलब्ध न होना, शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य के अलावा अन्य कार्य करवाना, विद्यालय हेतु आपातकालीन वित की व्यवस्था न होना, विद्यालय में पुस्तकालय की व्यवस्था न होना, विद्यालय में किताबों की मात्रा पर्याप्त संख्या में उपलब्ध न होना तथा विद्यालय में महिला व पुरूष हेतु अलग–अलग प्रसाधन की व्यवस्था का न होना इत्यादि समस्यायें परिलक्षित होती है। सर्वाधिक 73 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि शिक्षण कार्यों के दौरान छात्र/छात्राओं में नैतिक मूल्यों को महत्व दिया जाता है। 100 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि उनके विद्यालय में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को हमेशा दूर किया जाता हैं। 66 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि छात्र/छात्राओं हेतु शिक्षण सहायक सामग्री उपलब्ध नही हो पाती है,

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आर्थिक समस्याओं के क्षेत्र से सम्बन्धत प्राप्तियॉः– शत प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि उनकी नौकरी स्थायी है। 93 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि हर माह वेतन कभी–कभी मिलता है। शत प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि अपने आप में वृद्धि के लिए शिक्षण कार्य के अलावा कोई व्यसाय नहीं करते है। 79 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा दी जा रही वेतन पे ग्रेड से सामान्य रूप से सन्तुष्ट है शिक्षकों ने कहा कि विद्यालय में रखरखाव हेतु राज्य सरकार द्वारा कोई राशि प्रदान नहीं की जाती है। शत प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि विद्यालय में आपातकालीन वित की व्यवस्था प्रबन्धक द्वारा की जाती है।

व्यक्तिगत समस्या से सम्बन्धित–प्राप्तियॉ सर्वाधिक 100 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि शिक्षण कार्य के अतिरिक्त जैसे चुनाव में ड्यूटी, जनगणना कार्य तथा विद्यालय के कार्य हेतु जिला समाज कल्याण कार्यालय जाना पड़ता है। 43 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि विद्यालय में मूलभूत संसाधनों की व्यवस्था बहुत खराब, 73 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि उनके प्रति प्रबन्ध का दृष्टिकोण अच्छा है 100 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि शिक्षण कार्य हेतु किसी प्रकार का अनुचित दबाव नही डाला जाता है। सर्वाधिक 63 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि विद्यालय पर प्रशासनिक जिला स्तर द्वारा औचक निरीक्षण एक साल में एक बार होता है तथा 37 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि औचक निरीक्षण का समय निर्धारित नहीं है। सर्वाधिक 100 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय में शिक्षण कार्य छोड़ने का मन नहीं करता है

संस्थागत समस्या से सम्बन्धित प्राप्तियॉ– शिक्षकों ने कहा कि विद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु कक्ष संख्याओं की उपलब्धता अपर्याप्त मात्रा में है। सर्वाधिक 100 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि विद्यालय में भोजन की व्यवस्था हेतु कमरे की व्यवस्था हैं 77 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि विद्यालय में एक अच्छे प्रसाधन की व्यवस्था नही है 89 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि विद्यालय में महिला व पुरूष हेतु अलग–अलग प्रसाधन की व्यवस्था नही है 100 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि विद्यालय में एक अच्छे पुस्तकालय की व्यवस्था नही है।सर्वाधिक 94 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि विद्यालय में शिक्षकों हेतु बैठने की उचित व्यवस्था है 57 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि विद्यालय में पीने योग्य पानी की उचित व्यवस्था है तथा 43 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि विद्यालय में पीने योग्य पानी की उचित व्यवस्था नही है। 92 प्रतिशत शिक्षकों ने कहा कि विद्यालय में किताबों की मात्रा पर्याप्त संख्या में सामान्य रूप से उपलब्ध रहती है।

सन्दर्भ

कुमार ललित (2012); शिक्षक शिक्षा एवं गुणात्मक सुधार, भारतीय आधुनिक शिक्षा जनवरी 2010 वर्ष 32 अंक 3 राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, पृष्ठ 17–28

श्रीवास्तव राजेश (2012); जनजातीय शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष 32 अंक 4, अप्रैल 2012, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंस्थान एवं प्रशिक्षण परिषद पृष्ठ 19–25

जोशी सुषमा (2012); शान्ति शिक्षा एवं वर्तमान अध्यापक शिक्षा में निहितार्थ भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष 32 अंक 3 राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद पृष्ठ 92–95

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बंधोपाध्याय, अनु (2006); शिक्षक भारतीय आधुनिक शिक्षा जुलाई–अक्तूबर संयुक्तांक वर्ष 25 अंक 1–2, एन०सी०ई० आर टी० पृष्ठ 1–5

यादव सतिश (2009); अध्यापक शिक्षा समस्याएं एवं चुनौतियां भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष 30 अंक 2 पृष्ठ 79–85

चट्टोपाध्याय ए (2003) एजुकेशन ऑफ प्राइमरी स्कूल अटेंडेंस स्टडी ऑफ लिस्ट डिवेलप स्टेट इन इंडिया जनरल ऑफ एजुकेशनल प्लैनिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन

जैन (1985), डेवलपमेंट ऑफ प्राइमरी एजुकेशन लोकल बॉडीज इन महाराष्ट्र एमपी भोज एमबी बुच फोर्थ सर्वे आप आप रिसर्च इन एजुकेशन एनसीईआरटी न्यू दिल्ली

कुमार (1999). कम्युनिटी पार्टिसिपेशन इन प्राइमरी एजुकेशन प्राइमरी टीचर एनसीआरटी न्यू दिल्ली

निगम जेके (2004) यीशु एंड चैलेंजिस इन प्राइमरी एजुकेशन पेपर प्रेजेंटेशन सेमिनार लखनऊ विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश

यादव एम एस इवोल्यूशन आफ कंप्रिहेंसिव एक्सेस प्राइमरी एजुकेशन यूनिसेफ यूनिसेफ प्रोजेक्ट फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन एनसीईआरटी नई दिल्ली

यादव, शिप्रा, (2013) ''कस्तूरबा गॉधी बालिका विद्यालय के शैक्षिक परिवेश का व्यष्टि अध्ययन, लखनऊ।

बुच : एम0बी0 (1972–78), सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन।

बुच : एम0बी0 (1982–92), पंचम सर्वे ऑफ रिसर्च भाग–1

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies